विचार बिन्दु

चरित्र मनुष्य के अन्दर रहता है, यश उसके बाहर। –अज्ञात

परेशानी यही है कि हम परेशान नहीं होते

वर्तमान समय में सबसे चिंता की बात यह है कि नागरिकों ने, विशेष कर प्रबुद्ध समाज ने, किसी भी घटना पर कुछ करना तो दूर, परेशान होना तक छोड़ दिया है। कुछ वर्षों पूर्व तक, यदि किसी के साथ अन्याय होता, सरकार की निष्क्रियता के कारण किसी प्रकार की दुर्घटना होती या सरकारी विभाग द्वारा किसी को प्रताड़ित किया जाता, तो नागरिक समूह कई तरह से इसका प्रतिकार करते थे। कहा भी गया है, अन्याय का प्रतिकार नहीं करना, अन्याय को प्रोत्साहित करने के समान है। कुछ वर्षों से हम सभी नागरिक इस अपराध के, जाने–अनजाने, दोषी बनते जा रहे हैं।

20 दिसंबर, 2024 को प्रातःकाल, जयपुर के निकट भांकरोटा में राष्ट्रीय राज मार्ग पर, गैस टैंकर और कंटेनर ट्रक में टक्कर लगने से भीषण सड़क दुर्घटना हुई। इसमें 14 व्यक्ति जिंदा आग की लपटों में जलकर मर गए। लगभग 30 व्यक्तियों का, बुरी तरह जलने के कारण, गंभीर हालत में जयपुर के एसएमएस अस्पताल में इलाज चल रहा है। आग इतनी भीषण थी कि जो व्यक्ति जलकर मरे, उनमें से कुछ की तो पहचान ही नहीं हो पाई और शरीर ऐसी स्थिति में पहुंच गया कि उसे पोटलियों तक में बंद करना पड़ा। उनकी पहचान भी डीएनए के माध्यम से ही संभव हो पाएगी। यह सभी वे व्यक्ति हैं, जिनका कोई दोष नहीं था। वे अपने गंतव्य स्थल जयपुर से केवल आधा घंटे की दूरी पर थे जब अचानक आग ने उन्हें लपेटे में ले लिया और वे काल के मुंह में समा गए। उन कुछ क्षणों में उनके ऊपर क्या बीती होगी और किस प्रकार की असहनीय वेदना उन्होंने झेली होगी, उसकी कल्पना करके ही मन सिहर उठता है।

विडंबना यह है कि जिनके परिवार इस हादसे में प्रभावित नहीं हुए, वे सब केवल इसी बात की प्रतीक्षा में रहे कि जयपुर–अजमेर हाईवे कितना जल्दी खुल सकता है? जो लोग जलकर मर गए या गंभीर रूप से झुलस गए, उनके प्रति किसी की कोई चिंता या संवेदना नहीं देखी गई। यह दुर्घटना कोई प्राकृतिक आपदा नहीं थी अपितु मानव निर्मित थी। इसे प्राकृतिक आपदा कहकर, सरकारी तंत्र के अधिकारी अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते। जो बस इसमें जलकर खाक हो गई, उसके परमिट का नवीनीकरण नहीं हुआ था। यह सबको पता है कि अधिकांश वाहनों का फिटनेस सर्टिफिकेट परिवहन विभाग से मान्यता प्राप्त एजेंसी द्वारा जारी किया जाता है, जो कई बार बिना वाहन की जांच किए ही जारी कर दिया जाता है। हम प्रतिदिन स्पष्ट रूप से अनफिट वाहनों को सड़कों पर दौड़ते हुए देखते हैं। स्पष्ट है, यह परिवहन विभाग के अधिकारियों की मिलीभगत के बिना संभव नहीं है।

राजमार्ग के जिस 'कट' पर टैंकर के मुड़ने के कारण दुर्घटना हुई, उसे लगभग 2 वर्ष पूर्व ही बंद कर दिया जाना था। इस बारे में स्थानीय कई लोगों ने एन एच ए आई के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया किंतु ऐसा नहीं किया गया क्योंकि इसी स्थान पर क्लोवर लीफ का काम समय पर पूरा नहीं हुआ था। क्या इस दुर्घटना के लिए उन अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराया जाएगा जिन्होंने समय पर काम पूरा नहीं किया? इस प्रकार के बड़े वाहनों पर एक 'रिफ्लेक्टर स्ट्रिप' लगाई जाती है ताकि कोई मुड़ रहा है तो उसे दूर से ही पता लग जाए और वह उससे बच सके।

ऐसा हादसा पहली बार नहीं हुआ है न ही यह अंतिम है। हर बार इस प्रकार की दुर्घटनाओं के बाद एक रटा रटाया बयान आता है कि इसकी जांच की जाएगी और दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। पहले, इसी प्रकार के भीषण अग्निकांडो के बाद किन के विरुद्ध क्या कार्रवाई की गई, इसकी कोई जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। क्या यह एक आपराधिक कृत्य नहीं है? क्या इसके लिए जिम्मेदार अधिकारियों के विरुद्ध हत्या का मामला नहीं दर्ज किया जाना चाहिए? अपना कर्तव्य समय पर नहीं करने के कारण निर्दोष लोगों को असमय काल कवलित होना पड़ा है। किसी ने बेटा खोया, किसी ने पिता। इसी हादसे में छोटे–छोटे बच्चों की मां अनीता मीणा भी मौत के मुंह में समा गई। मरने वालों में पूर्व आई ए एस करणी सिंह भी थे जिन्होंने कुशल प्रशासक की तरह अजमेर कलेक्टर के पद पर रहते हुए उर्स और पुष्कर मेले सफलता पूर्वक आयोजित करवाए। वही व्यक्ति प्रशासनिक लापरवाही के कारण इस हादसे में बेमौत मारे गए।

मीडिया एक–दो दिन इस समाचार को प्रकाशित करके अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेंगे। फिर सब कुछ वैसा ही चलता रहेगा, अगले हादसे तक।

लगभग 50 वर्ष पूर्व जब मैने प्रशासनिक सेवा में प्रवेश लिया था और उसके बाद के कई वर्षों तक, जब विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य करने का अवसर मिला, तो यह देखा कि समाचार पत्रों में संबंधित विभाग अथवा जिले के बारे में कोई ऐसा समाचार प्रकाशित हो जाए जो नगरिकों की परेशानी के बारे में हो, तो उसे उच्च प्राथमिकता देते हुए उस पर तत्काल कार्रवाई की जाती थी। आजकल, यदि पूरा पृष्ठ भी किसी विभाग अथवा जिले की बड़ी समस्याओं से रंग दिया जाए, तब भी किसी अधिकारी को कोई परेशानी तक नहीं होती।

ऐसी घटनाओं से समाज का प्रबुद्ध वर्ग भी परेशान तक न हो एवं इसे अपने नियति मान ले, तो सुधार के सभी रास्ते बंद हो जाते हैं। किसी अन्य के साथ होने वाले अन्याय के प्रति आवाज उठाने की बात तो दूर, उससे उद्वेलित होना भी समाप्त हो गया है। यहां तक कि जब स्वयं के साथ भी होने वाले अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने के बजाय, सलाह यही दी जाती है कि कुछ ले–देकर काम करा लो और किसी सरकारी अधिकारी से पंगा मत लो। क्या अपनी न्यायोचित कार्य के लिए सरकारी अधिकारियों के समक्ष प्रतिवेदन देना एवं अपना प्रतिरोध दर्ज करना गलत है ? गलत तो यह है है कि किसी और की परेशानी में आप परेशान होना भी छोड़ दें।

> **कल्पना कीजिए, यदि अंग्रेजों की गुलामी के कारण किसी को परेशानी नहीं होती तो क्या कभी देश स्वतंत्र हो पाता? गांधी, सुभाष, पटेल, भगत सिंह जैसे अनगिनत स्वतंत्रता सेनानी परेशान हुए तब स्वतंत्रता संग्राम हुआ। किसी भी व्यवस्था में सुधार की पहली आवश्यकता ही यह है कि न केवल पीड़ित व्यक्ति ही परेशान हो अपितु अन्य नागरिक भी किसी दूसरे की परेशानी अनुभव करें। ऐसा ना होना संवेदनहीनता की पराकाष्ठा ही कहा जा सकता है।**

ऐसे अनेक उदाहरण हम प्रतिदिन के जीवन में देख सकते हैं जिनके कारण पहले सामान्य जन एवं अधिकारी दोनों ही परेशान होते थे और अब दोनों ने ही इसे एक सामान्य बात मानते हुए इस पर परेशान होना छोड़ दिया है।

किसी गरीब व्यक्ति का नाम बीपीएल सूची में नहीं हो, किसी वृद्ध व्यक्ति को वर्षों तक पेंशन न मिले तो भी किसी को कोई परेशानी नहीं होती।हाल ही में सरकार ने एक आदेश निकाल कर पेंशनर्स को सरकारी चिकित्सा सुविधा लेने के लिए यह आवश्यक कर दिया है कि वह स्वयं अस्पताल में जाएं अपना फोटो खिंचवाएं। इसके अभाव में उन्हें आर जी एच एस के अंतर्गत चिकित्सा सुविधा का लाभ नहीं मिलेगा। किसी ने आदेश निकालते समय यह नहीं सोचा कि कोई अशक्त, लकवा ग्रस्त या गंभीर बीमारी से पीड़ित व्यक्ति किस प्रकार अस्पताल में जाएगा और पंक्ति में खड़े होकर अपना फोटो खिंचवाएगा? इसका परिणाम यह होगा कि अनेक पेंशनर्स इस योजना के लाभ से वंचित रहेंगे। यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक राजकीय कर्मचारी ने सेवाकाल में इस योजना हेतु अपना अंशदान प्रतिमाह किया है।

कल्पना कीजिए, यदि अंग्रेजों की गुलामी के कारण किसी को परेशानी नहीं होती तो क्या कभी देश स्वतंत्र हो पाता? गांधी, सुभाष, पटेल, भगत सिंह जैसे अनगिनत स्वतंत्रता सेनानी परेशान हुए तब स्वतंत्रता संग्राम हुआ। किसी भी व्यवस्था में सुधार की पहली आवश्यकता ही यह है कि न केवल पीड़ित व्यक्ति ही परेशान हो अपितु अन्य नागरिक भी किसी दूसरे की परेशानी अनुभव करें। ऐसा ना होना संवेदनहीनता की पराकाष्ठा ही कहा जा सकता है।

यदि रास्ते में किसी लड़की के साथ छेड़खानी होती हुई देखें, पुलिस को किसी निरपराध को प्रताड़ित करता हुआ देखें, बेरोजगारी के कारण युवाओं को आत्महत्या करते हुए देखें, फिर भी आप परेशान न हो तो ऐसा लगता है कि हमारी रगों में आजकल रक्त के बजाय पानी का प्रवाह होने लगा है।

अधीनस्थ कर्मचारी एवं अधिकारी यदि भ्रष्टाचार में लिप्त हों और उनकी उच्च अधिकारियों को शिकायत तक न की जाए, केवल इस डर से कि, शिकायत होने पर उन्हें ही प्रताड़ित न कर दिया जाए, तो यह स्थिति चिंताजनक है।

हमारे ही शहर के किसी मोहल्ले में कई दिनों बिजली ना आए, पीने का पानी ना आए, सीवरेज का पानी पीने के पानी में मिल जाए, ठेले पर छोटा–मोटा रोजगार करने वाले को कोई डंडा मारकर भगा दे, उसका ठेला उलट दे, और हमें उससे कोई परेशानी न हो और हम रात को चैन की नींद सो जाएं, तो मान लीजिए वह समाज के लिए बहुत ही बुरे दिन हैं।

कोई गरीब, असहाय व्यक्ति अस्पताल में जाए और डॉक्टर न मिले, सरकारी डॉक्टर चिकित्सालय में मरीजों को देखने के बजाय निजी चिकित्सालय में जाकर पैसे कमाने में व्यस्त हों, सरकारी विद्यालय में अध्यापक पढ़ाने के बजाय ट्यूशन करने में लगे हों या और कोई काम धंधा करने में व्यस्त हों, तब भी हम इस लिए परेशान न हों कि सरकारी काम है, हम क्यों परेशान हों तो फिर स्थिति चिंताजनक है।

कोई भी सरकारी विभाग उससे अपेक्षित कार्य न करें और हम यह कह कर पल्ला झाड़ लें कि हमें क्या फर्क पड़ता है, सरकार का काम तो ऐसे ही चलता है, यही वह मानसिकता है जिसके कारण हम अपने नागरिक कहलाने का अधिकार भी धीरे–धीरे खोते जा रहे हैं। शायद इसमें हमारी पुरानी धार्मिक मान्यताएं भी कहीं ना कहीं परोक्ष रूप से सहायक होती हैं कि जिसने जैसा कर्म किया है वैसे उसे भोगना होगा और यही उसके भाग्य में लिखा होगा। हम अपनी उदासीनता को भाग्य का नाम देकर स्वयं को अलग कर लें और अपना जीवन चैन से जीते रहें तो यह न केवल अन्य लोगों के साथ अन्याय है अपितु हम अपनी अंतरात्मा के साथ भी अन्याय कर रहे हैं। दूसरों की तकलीफ से हम परेशान न होने की स्थिति से बाहर निकल कर, परेशान होना प्रारंभ कर दें, तो हम अपने इंसान होने का सबूत भी देंगे।

परेशान होने का सबूत केवल आंदोलन करने के रूप में ही हो आवश्यक नहीं है। प्रबुद्ध वर्ग उस बारे में लिखना बोलना और सोचना तो अवश्य प्रारंभ करे। यदि इतना भी वह कर देता है और अपनी परेशानी को सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त करता है तो वह एक हद तक अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रहा है। इसके लिए कानून– व्यवस्था को हाथ में लेने की आवश्यकता नहीं है।

हम शायद इसलिए भी परेशान नहीं होते क्योंकि हमें बार–बार यह अच्छी तरह समझा दिया गया है कि भारत दुनिया की पांचवी बड़ी अर्थशक्ति है, सबसे तेजी से बढ़ाने वाली अर्थव्यवस्था है, शीघ्र ही चंद्रमा पर पहुंचने वाले हैं, हम शीघ्र ही विकास विश्व गुरु और विकसित राष्ट्र बनने वाले हैं। जब ये सारी बातें हमारे दिमाग में ठूंस दी गई हैं तो फिर हमें परेशान होने की क्या आवश्यकता है? इन सब के बावजूद यदि अभी भी हम वही सब देखते हैं जैसा कि ऊपर लिखा गया है तो ग़ालिब का यही शेर याद आता है–"दिल को बहलाने को ग़ालिब ख्याल अच्छा है"। यदि हम इस कल्पना लोक से बाहर निकल कर वास्तविकता से साक्षात्कार करें तो हम पाएंगे कि हमें परेशान होना आवश्यक है। हमारी परेशानी केवल यह है कि हमने गलत बातों पर परेशान होना बंद कर दिया है। यदि हम परेशान होंगे, तो परेशानी के कारण अवश्य ढूंढेंगे, चाहे वह हमारे साथ हो चाहे किसी अन्य के साथ।

संभव है, हमारी परेशानी से उत्पन्न प्रतिरोध से कोई हल न निकले, किंतु हमें इस बात का तो संतोष अवश्य होगा कि हमने उसके लिए सही दिशा में प्रयास किया। यदि प्रयास ही नहीं किया तो फिर आने वाली पीढ़ियां हमें कभी माफ नहीं करेंगी।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

जननायक अटल बिहारी वाजपेयी

25 दिसम्बर 2024 को अटलजी के 100वें जन्मदिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित

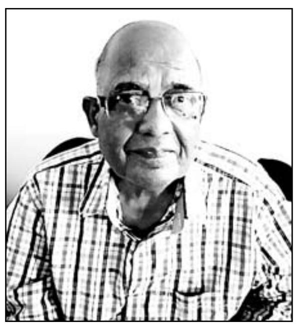

डॉ. जे.के. गर्ग

वाक्य चातुर्य के धनी राष्ट्रभक्त मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की संकल्प शक्ति, योगीराज भगवान श्रीकृष्ण की राजनीतिक कुशलता चातुर्य एवं कूटनीति और आचार्य चाणक्य की निश्चयात्मिका बुद्धि के धनी राजनीतिज्ञ व्यक्तियों में जन नायक अटल बिहारी वाजपेयी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता हैं क्योकि अटल जी ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र सेवा हेतु अर्पित किया था। उनका तो मंत्र था देश के लिए जियें और देश के लिए ही मरें, भारत माता का कण–कण शंकर है, वहीं पानी की बूंद–बूंद गंगाजल है।

अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, भारत तो जीता–जागता राष्ट्रपुरुष है। हिमालय इसका मस्तक है, गौरीशंकर इसकी शिखा है। कश्मीर किरीट है, पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं। दिल्ली इसका दिल है। विन्ध्याचल कटि है, नर्मदा करधनी है। पूर्वी और पश्चिमी घाट इसकी दो विशाल जंघाएं हैं। कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पखारता है। पावस के काले–काले मेघ इसके कुंतल केश हैं। चांद और सूरज इसकी आरती उतारते हैं, मलयानिल चंवर घुलता है। यह वन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है। यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है। इसका कंकर–कंकर शंकर है, इसका बिंदु–बिंदु गंगाजल है। हम जिएंगे तो इसके लिए, मरेंगे तो इसके लिए।

उन्होंने बतलाया कि हिन्दू धर्म तथा संस्कृति की एक बड़ी विशेषता समय के साथ बदलने की उसकी क्षमता रही है। अटलबिहारी वाजपेयी कहा करते थे कि मनुष्य जीवन अनमोल निधि है, पुण्य का प्रसाद है। हम केवल अपने लिए न जिए, औरों के लिए भी जिए। उन्होंने अनेको बार कहा है कि भारत के लिए हँसते–हँसते प्राण न्योछावर करने में मैं गर्व का अनुभव करूँगा। अटल बिहारी जी का जन्म ग्वालियर में 25 दिसम्बर 1924 को हुआ था उनके माता–पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी एव कृष्णा वाजपेयी था। रामचंद्र वीर द्वारा रचित अमर कृति 'विजय पताका' पढ़कर अटल जी के जीवन की दिशा ही बदल गयी। अटल जी की बी.ए. की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में हुई। अटलजी ने राजनीति शास्त्र से प्रथम श्रेणी में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। एलएलबी की पढ़ाई को बीच में ही विराम देकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम में लग गए। भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से अटल जी भी प्रमुख नेताओं में थे। उन्होंने लम्बे समय तक पत्रकारिता करते हुए राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और वीर अर्जुन आदि अनेक पत्र–पत्रिकाओं के संपादक के रूप में कार्य किया। अटल बिहारी ने अपना सार्वजनिक जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लेकर प्रारम्भ किया। अटलबिहारी जी खुद कहा था कि वे विवाहित तो है किन्तु ब्रह्मचारी नहीं है यह उनके स्पष्टवादिता का प्रतीक है। सन् 1942 में जब गांधी जी ने 'अँग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया तो ग्वालियर भी अगस्त क्रांति की लपटों में आ गया। छात्र वर्ग आंदोलन की अगुवाई कर रहा था। अटलजी तो सबके आगे ही रहते थे। जब आंदोलन ने उठा रूप धारण कर लिया तो पकड़–धकड़ होने लगी। अटल जी पुलिस की चपेट में आ गए। उस समय वे नाबालिग थे। इसलिए उन्हें आगरा जेल की बच्चा बैरक में रखा गया। चौबीस दिनों की अपनी इस अल्प प्रथम जेल यात्रा के संस्मरण वे हँस–हँसकर सुनाते थे।

उनके प्रधानमंत्रित्व काल में कश्मीर से लेकर पाकिस्तान तक से बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ था। अलगाववादियों से बातचीत के फैसले पर सवाल उठा कि क्या बातचीत संविधान के दायरे में होगी? तो उनका जवाब था, इंसानियत के दायरे में होगी। अटल बिहारी जी के राजनीतिक विरोधी भी उनकी वाकपटुता और अकाट्य तर्कें के कायल रहते थे। अटलजी जब विदेश मंत्री बने तो विभाग के अधिकारीयों ने उनके कक्ष से प्रथम प्रधानमंत्री नेहरुजी की फोटो को हटाने पर उन्हें प्रताड़ित करते हुये उनसे कहा कि परम्परा की पालना होनी चाहिये इसलिये नेहरूजी का फोटो वापस लगाएँ। उन्होंने अपने विपक्षीयों पर कभी भी व्यकिगत आरोप लगाये और ना ही उनकी देशभक्ति पर अंगुली उठाई। उनकी लोकप्रियता का नतीजा था कि वे देश के विभन्न प्रदेशो यथा उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश और दिल्ली से सांसद चुने गये। दो बार राज्यसभा के लिये भी निर्वाचित हुए।

अटलजी सबसे लम्बे समय तक सांसद रहे थे। जब वे पहली दफा सांसद बने और उन्होंने संसद अपना भाषण दिया तब तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरूजी ने कहा कि यह युवा सांसद एक दिन इस देश का प्रधानमंत्री बनेगा। दोहरी सदस्यता में मसले पर जनता पार्टी से अलग होकर पुराने जनसंघ के लोगो ने 6 अप्रैल 1980 में भारतीय जनता पार्टी का गठन किया इस पार्टी के प्रथम अध्यक्ष पद का दायित्व भी वाजपेयी को सौंपा गया। पूर्वी पाकिस्तान के विघटन एवं बांग्लादेश देश के जन्म के समय अटल जी ने अपनी राजनैतिक प्रबल विरोधी इंदिरा गांधी जी जी की सराहना करते हुए उन्हें माँ दुर्गा के समान बता कर एक कुशल एवं परिपक्व राजनीति के रूप में अपने आप को स्थापित किया। वाजपेयी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के पहिले प्रधानमंत्री बने। 2002 के गुजरात के साम्प्रदायिक दंगों हुई सैकड़ों मौतों बाद प्रधानमंत्री वाजपेयी जी ने अपनी ही पार्टी के मुख्यमंत्री और वर्तमान में देश के प्रधानमंत्री को को राज धर्म के पालन करने की सीख देने की हिम्मत की थी। वाजपेयी जी ने पाकिस्तान से सामान्य सम्बन्ध बनाने के लिए 19 फरवरी 1999 को लाहौर तक की बस द्वारा सफर किया वाघा बॉर्डर पर तत्कालीन पाक प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने उनका स्वागत किया। किन्तु पाकिस्तान ने 3 मई 1999 को कारगिल में अतिक्रमण कर उसे हडपना चाहा तब भारत ने उसे करारा जवाब दिया। वाजपेयी जी ने पाकिस्तान से पुनःसामान्य सम्बन्ध बनाने के लिए तत्कालीन पाक राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के साथ आगरा में 14 से 16 जुलाई 2001 तक शिखर वार्ता की किन्तु कोई नतीजा नहीं निकला और पाक अपनी हरकतों से बाज नहीं आया।

वाजपेयी जी प्रथम गेर कांग्रेसी पहले प्रधानमंत्री थे जिन्होंने गठबंधन सरकार को न केवल स्थायित्व दिया अपितु सफलतापूर्वक संचालित भी किया। अपने प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों की संभावित नाराजगी की परवाह नहीं करते हुए राष्ट्र हित में 1998 में दूसरा परमाणु परीक्षण कर राजनीतिक परिपक्वता का परिचय दिया। अटल जी पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण देकर देश को एवं हिन्दी को गौरवान्वित किया था।

जननायक वाजपेयी जी ने एक सौ वर्ष से भी ज्यादा पुराने कावेरी जल विवाद को सुलझाया। ऐसा माना जाता है कि अटल जी के शासनकाल में भारत में जितनी सड़कों का निर्माण हुआ उतना सिर्फ शेरशाह सूरी के समय में ही हुआ था। अटल जी कहा करते थे कि इंसान बनो, केवल नाम से नहीं, रूप से नहीं, शक्ल से नहीं बल्कि हृदय से, बुद्धि से, ज्ञान से बनो। अटलजी ने भारत के प्रजातंत्र को और मजबूती प्रदान की थी उनके लिये भारत का संविधान सर्वोच्च था। सन् 2004 में अपने कार्यकाल पूरा होने से पहले ही भयंकर गर्मी में वाजपेयी जी ने इंडिया शाइनिंग के नारे के साथ लोकसभा के चुनाव कराये जिससे भा.ज.पा. के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन (एन.डी.ए.) को विजय नहीं मिल सकी थी। अटल बिहारी राजनेता के साथ लेखक और कवि भी थे उन्होंने अनेकों पुस्तके एवं काव्य संग्रह लिखे जिनमे मेरी इक्यावन कविताएँ, मृत्यु या हत्या, अमर बलिदान (लोक सभा में अटल जी के वक्तव्यों का संग्रह), कैदी कविराय की कुंडलियाँ, संसद में तीन दशक, अमर आग है, सेक्युलर वाद, राजनीति की रपटीली राहें, बिन्दु बिन्दु विचार आदि मुख्य है। अटल बिहारी जी को अनेकों पुरस्कार और सम्मानों से नवाजा गया जिनमें प्रमुख हैं फ्रेंड्स ऑफ बांग्लादेश लिबरेशन वार अवॉर्ड, भारत रत्न आदि। अटल जी का मानना था कि अपना देश एक मंदिर है, हम पुजारी हैं, राष्ट्र देव की पूजा में हमें अपने आपको समर्पित कर देना चाहिए।

हमारे पड़ोसी कहते हैं एक हाथ से ताली नहीं बजती हमने कहा कि चुटकी तो बज सकती है। वे वास्तव में एक महामानव ही थे जिनको इतिहास सदेव याद करेगा। लम्बी बीमारी के बाद जनप्रिय अटल जी 16 अगस्त 2018 को शाम 5 बजे पंचमहाभूत में विलीन हो गये। उनका समाधि स्थल राजघाट के पास शांति वन में बनाया गया जिसे स्मृति स्थल के रूप में जाना जाता है। अटल जी की अस्थियों को देश की सभी प्रमुख नदियों में विसर्जित किया गया। 25 दिसम्बर 2024 को अटल जी के 100वें जन्मदिवस पर सभी भारतीय उन के श्रीचरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

–डॉ. जे के गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज
शिक्षा, जयपुर

हमारी समृद्ध विरासत, परम्पराओं और संस्कृति का उत्सव है "कोटा महोत्सव" : ओम बिरला

- **लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गणपति पूजन-वंदन के साथ महोत्सव का शुभारंभ किया**

कोटा, (निसं)। हाड़ौती के अनूठे सांस्कृतिक पर्व कोटा महोत्सव का उल्लास के वातावरण में सोमवार को शुभारंभ हुआ। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने खड़े गणेशजी मंदिर में भगवान श्रीगणेश की पूजा–अर्चना के बाद कोटा महोत्सव का शुभारंभ किया। गणपति वंदना और कथक नृत्य की मनोरम प्रस्तुतियों के बीच तीन दिवसीय कोटा महोत्सव आरंभ हो गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ओम बिरला ने कहा कि यह हम सभी के लिए ऐतिहासिक क्षण है, जब हम इस कोटा की समृद्ध विरासत, परंपराओं और संस्कृति का उत्सव मनाने जा रहे हैं। हमारा कोटा, जहां हर कोने में ऊर्जा, उत्साह और नई संभावनाओं की लहर है, अब अपनी विशिष्ट पहचान को और सुदृढ़ करने की ओर अग्रसर है। यह आयोजन न केवल कोटा के प्रत्येक नागरिक को अपने गौरवशाली अतीत से जोड़ने का एक सुनहरा अवसर देगा, बल्कि इसकी विकास यात्रा और वैश्विक पहचान को भी रेखांकित करेगा।

कोटा महोत्सव के तहत पहले दिन विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

बिरला ने कहा कि मुझे विश्वास है कि यह कोटा महोत्सव हमारी परंपराओं के संरक्षण और उनकी आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुति का प्रतीक भी बनेगा। मैं आशा करता हूँ कि आने वाले सालों में यह महोत्सव न केवल राजस्थान बल्कि पूरे देश की शान बनेगा। कोटा, जिसने शिक्षा के क्षेत्र में खुद को स्थापित किया है, अब संस्कृति और पर्यटन के क्षेत्र में भी अपना परचम लहराएगा।

लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने कहा कि वर्ष 2025 कोटा के लिए विकास और प्रगति का नया अध्याय लेकर आएगा। यह नववर्ष हमारे संकल्पों को साकार करने का वर्ष होगा और कोटा–बूंदी सहित पूरे हाड़ौती क्षेत्र के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा। उन्होंने आयोजन से जुड़े समस्त संस्थाओं को धन्यवाद देते हुए हाड़ौतीवासियों से आग्रह किया कि वे इस महोत्सव में उत्साहपूर्वक सहभागी बनें। ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा, कबीर आश्रम के संत, जिला कलेक्टर डॉ. रविंद्र गोस्वामी, पुलिस अधीक्षक डॉ. अमृत दुहन सहित राकेश जैन, आयोजन समिति पदाधिकारी अशोक माहेश्वरी, क्रांति जैन, नितिन विजय, डॉ. साकेत गोयल सहित आयोजन से जुड़ी विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी, जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

समारोह में त्रिनेत्र कथक संस्थान की निदेशक अंतर्राष्ट्रीय कलाकार गरिमा भार्गव के निर्देशन में बाल नृत्यांगनाओं ने गणपति स्तुति प्रस्तुत की। गणपति की आराधना के स्वरों में डूबे माहौल में सभी अभिभूत हुए। लोकसभा अध्यक्ष ने कलाकार गरिमा भार्गव एवं दल का अभिनंदन किया। समारोह का मंच संचालन पुरूषोत्तम शर्मा एवं लक्ष्मी देवी ने किया।

जोधपुर की हितेशी बोराणा के अंगदान किए

जोधपुर, (कासं)। नर्सिंग की पूर्व छात्रा हितेशी बोराणा के अंग रविवार को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान एम्स डोनेट किए गए। हितेशी ने एम्स से ही नर्सिंग की पढ़ाई की थी। वे राजकोट में हुए रोड एक्सीडेंट में घायल हो गई थी। डॉक्टरों ने उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया। इसके बाद परिजन जोधपुर लेकर आए। आज एम्स में अंग डोनेट किए गए। उनकी एक किडनी और लीवर जोधपुर में ही अलग–अलग मरीजों को लगाया गया। वहीं एक किडनी जयपुर के एसएमएस हॉस्पिटल भेजी गई। इसके बाद एम्स प्रशासन ने हितेशी की बॉडी को फूलों से सजी एंबुलेंस में घर पर भेजा। किडनी 38 साल की महिला को ट्रांसप्लांट की गई। किडनी ब्लड प्रेशर ज्यादा होने की वजह से खराब हो गई थी, जबकि लीवर 40 साल के व्यक्ति को लगाया गया। हेपेटाइटिस की वजह से उसका लीवर खराब हो गया था।

गौरतलब है कि पाल रोड के रूपनगर द्वितीय की रहने वाली हितेशी (31) ने जोधपुर के एम्स से ही बीएससी और एमएससी नर्सिंग की थी। डेढ़ साल पहले एम्स राजकोट में नर्सिंग ऑफिसर के पद पर उसके नौकरी लग गई 12 दिसंबर को राजकोट में सड़क दुर्घटना हुई जिससे उसे गंभीर चोट लगी। 21 दिसंबर को एम्स जोधपुर में लाया गया। यहां जांच के बाद डॉक्टरों ने ब्रेन डेड घोषित कर दिया। इस पर उनके माता–पिता ने ऑर्गन डोनेट करने का निर्णय किया।

राशिफल मंगलवार 24 दिसम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, हस्त नक्षत्र दिन 12:17 तक, शोभन योग रात्रि 8:53 तक, गर करण सायं 7:53 तक, चन्द्रमा रात्रि 1:51 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–कर्क, बुध–वृश्चिक, गुरू–वृष, शुक्र–मकर, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:52 से 11:22 तक, लाभ–अमृत 11:09 से 1:43 तक। शुभ 3:01 से 4:18 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 5:35

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। दिनचर्या में सुधार होगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। चलते कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी रहेगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा।

मकर

परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है।

मीन

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।